© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 04 | July - September 2023

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में बहु.विषयक दृष्टिकोणः एक अध्ययन

डॉ.राजेश ढाका

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,

जगन्नाथ विश्वविद्यालय बहादुरगढ़

एक बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण एक शिक्षण-शिक्षण कार्यक्रम में एक अनूठी विधि है। यह अलग-अलग विषयों की मदद से किसी विषय, विषय या मुद्दे को स्पष्ट करने के लिए पाठ्यक्रम एकीकरण का एक अनूठा तरीका है। एक बहु-विषयक पाठ्यक्रम में, एक ही विषय या विषय-वस्तु का अध्ययन करने के लिए कई विषयों का उपयोग किया जाता है। यह शिक्षण की एक शक्तिशाली विधि है जो विषय क्षेत्र को समृद्ध और बढ़ाने के लिए एक अनुशासन या पाठ्यक्रम की सीमाओं को पार करती है। यह दृष्टिकोण शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को एकीकृत करने और उनकी गुणवत्ता और स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए बहुत उपयोगी और प्रासंगिक है। इसलिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने देश में शिक्षक शिक्षा के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण निश्चित रूप से ऐसे व्यक्तियों का विकास करेगा जिनके पास कला, विज्ञान, मानविकी, वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान, व्यावसायिक और व्यावसायिक और शिक्षा के अन्य क्षेत्रों जैसे अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में 21 वीं सदी की महत्वपूर्ण क्षमताएं हैं शिक्षा के बारे में। शिक्षकों के पास शिक्षा को बढ़ाने और समृद्ध करने से संबंधित लगभग सभी कौशल और ज्ञान होना चाहिए। इस दृष्टिकोण की मदद से कक्षा निर्देश। इसलिए, यह पेपर इसके विभिन्न लाभ और हानि पर प्रकाश डालता है। एनईपी-2020 के विशेष संदर्भ और प्रासंगिक बनाने के साथ बहु-विषयक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम सुझाव देते हैं।शिक्षकों के पास इस दृष्टिकोण की मदद से कक्षा निर्देश को बढ़ाने और समृद्ध करने से संबंधित लगभग सभी कौशल और ज्ञान होना चाहिए। इसलिए, यह पेपर एनईपी-2020 के विशेष संदर्भ के साथ बहु-विषयक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के विभिन्न लाभ और हानि पर प्रकाश डालता है और प्रासंगिक सुझाव देता है।

मुख्य शब्द : बहुविषयक दृष्टिकोण, पाठ्यक्रम एकीकृत, शिक्षक शिक्षा, विशेष शिक्षा

परिचय

शिक्षक शिक्षा में बहु-विषयक दृष्टिकोण एक समय की आवश्यकता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह दृष्टिकोण नया नहीं है। विभिन्न अवधियों में देश में शिक्षा की प्राचीन गुरुकुल प्रणाली ने बहु-विषयक शिक्षा का सबसे अच्छा उदाहरण स्थापित किया। इन संस्थानों में अध्ययन करने वाले छात्रों ने विज्ञान, चिकित्सा, स्वास्थ्य, योग, ध्यान, इतिहास और यहां तक कि लगभग सभी प्रकार के ज्ञान जैसे विभिन्न विषयों से व्यापक ज्ञान एकत्र किया है। गुरु (शिक्षक) शिष्यों को उनके पूर्ण विकास के लिए अपना ज्ञान और अनुभव प्रदान करते हैं और इसलिए वे निर्देश और सीखने के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण से अच्छी तरह से सुसज्जित होते हैं। शिक्षक शिक्षा में बहु-विषयक दृष्टिकोण एक समय की आवश्यकता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह दृष्टिकोण नया नहीं है। विभिन्न अवधियों में देश में शिक्षा की प्राचीन गुरुकुल प्रणाली ने बहु-विषयक शिक्षा का सबसे अच्छा उदाहरण स्थापित किया। इन संस्थानों में अध्ययन करने वाले छात्रों ने विज्ञान, चिकित्सा, स्वास्थ्य, योग, ध्यान, इतिहास और लगभग सभी प्रकार के ज्ञान जैसे विभिन्न विषयों से व्यापक ज्ञान एकत्र किया है। गुरु (शिक्षक) शिष्यों को उनके पूर्ण विकास के लिए अपना ज्ञान और अनुभव प्रदान करते हैं और इसलिए वे निर्देश और सीखने के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण के साथ अच्छी तरह से सुसज्जित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 देश के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों से अपने क्षेत्र में बहु-विषयक दृष्टिकोण पेश करने का आग्रह करती है। इस मुद्दे पर अलग-अलग रिपोर्ट से पता चलता है कि शिक्षा की यह विधि या दृष्टिकोण आसानी से वर्तमान समय के मानदंडों और दक्षताओं के साथ प्रतिस्पर्धा करता है और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को बढ़ाने और समृद्ध करने में मदद करता है। इस प्रकार, शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में एक बहु-विषयक दृष्टिकोण हितधारकों, विशेष रूप से शिक्षकों और छात्रों के लिए विभिन्न दायरे और अवसर खोलता है। यहाँ, हम शिक्षा में इस दृष्टिकोण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करेंगे, विशेष रूप से शिक्षक शिक्षा में इसकी संभावित सीमाओं और संभावनाओं के साथ एनईपी 2020 में एक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की परिकल्पना की गई है जिसका उद्देश्य मानव की बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक क्षमताओं को एकीकृत तरीके से विकसित करना है।एनईपी ने 2030 के अंत तक प्रत्येक जिले में एक बड़े बहु-विषयक उच्च शिक्षा संस्थान की भी परिकल्पना की। यू. जी. सी. के अनुसार ऐसी शिक्षा कला, विज्ञान, मानविकी, भाषा,

सामाजिक विज्ञान, व्यावसायिक, तकनीकी और व्यावसायिक सहित विभिन्न क्षेत्रों में 21वीं सदी की महत्वपूर्ण क्षमताओं वाले व्यक्तियों को विकसित करने में मदद करेगी। सामाजिक जुड़ाव, संचार, चर्चा, बहस और कठोर विशेषज्ञता भी समग्र शिक्षा के अंतर्गत आएगी। लंबे समय में, यह सभी स्नातक कार्यक्रमों का दृष्टिकोण होगा।

उद्देश्यः

यह पेपर निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित है। जैसे कि

- शिक्षा में बहु-अनुशासनात्मक शिक्षा या बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण की स्पष्ट अवधारणा देना;
- शिक्षा में बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना;
- एनईपी-2020 में प्रस्तावित शिक्षक शिक्षा में बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण के विभिन्न पहलुओं को उजागर करना;
- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में इस पद्धति की प्रासंगिकता और महत्व का पता लगाना और अंत में इसके साथ मिलकर आवश्यक सुझावों की सिफारिश करना।

कार्यप्रणालीः

इस पेपर का मुख्य उद्देश्य शिक्षक शिक्षा में बहु-विषयक दृष्टिकोण के विभिन्न पहलुओं को उजागर करना है। यह अध्ययन पूरी तरह से उपलब्ध संसाधनों जैसे पुस्तकों से एकत्र किए गए द्वितीयक डेटा पर आधारित है। पत्रिकाएँ, लेख, पत्रिकाएँ, वेब संसाधन आदि। विधियों का पालन यहाँ वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक रूप में किया जाता है।

चर्चाः

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो (आई. बी. ई.-यूनेस्को) पाठ्यक्रम एकीकरण के लिए समकालीन दृष्टिकोण के तीन प्रमुख प्रकारों को निर्दिष्ट करता है जैसे-शिक्षा में बहु-विषयक, अंतःविषय और अंतर-विषयक दृष्टिकोण। बहु-विषयक दृष्टिकोण एक संपूर्ण या व्यापक विधि है जो अलग-अलग ज्ञान क्षेत्रों को एकीकृत करके एक विचार, विषय या सामग्री को शामिल करती है। यह शिक्षण का एक बहुत ही मजबूत और प्रासंगिक तरीका है जो सीखने के अनुभव के क्षेत्र और गहराई को बढ़ाने या विकसित करने के लिए एक अनुशासन या पाठ्यक्रम की सीमाओं को पार करता है। यह पाठ्यक्रम एकीकरण का एक दृष्टिकोण है जो मुख्य रूप से विभिन्न विषयों और विविध दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित करता है जबकि एक विषय, विषय या मुद्दे को चित्रित करता है।

यहाँ एक ही विषय का अध्ययन एक से अधिक विषयों के दायरे से किया जाता है और शिक्षार्थी समुदाय को समृद्ध करने के लिए इन अलग-अलग ज्ञान को एकीकृत किया जाता है। यह प्रकृति में अद्वितीय है और छात्रों को अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों के उदाहरणों और अनुभवों का हवाला देकर अपने व्यक्तिगत और शैक्षणिक अनुभवों को समृद्ध करने की अनुमति देता है। उदाहरण के लिए, हम कह सकते हैं कि मानविकी का छात्र इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों से एक विषय ले सकता है और प्रबंधन का छात्र आसानी से सामाजिक विज्ञान विषयों से एक विषय ले सकता है। एक बहु-विषयक पाठ्यक्रम एक से अधिक विषयों के दृष्टिकोण से एक विषय का अध्ययन करना और एक अलग अनुशासनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करके एक समस्या का समाधान करना है। (Klaassen, 2018). एक छात्र के लिए विभिन्न प्रकार के कौशल जैसे समस्या-समाधान, आलोचनात्मक सोच, समय प्रबंधन, स्व-प्रबंधन, संचार, विश्लेषण और डेटा व्याख्या, अनुसंधान कार्यप्रणाली, टीम वर्क आदि प्राप्त करना बहुत आसान है। शिक्षा में बहु-विषयक दृष्टिकोण की मूल बातें जानने के लिए, शिक्षा में अन्य दृष्टिकोण जैसे अंतःविषय और अंतःविषय को जानना आवश्यक है। एक अंतःविषय दृष्टिकोण दो अलग-अलग विषयों के ज्ञान को एक साथ लाने और इसे बच्चे के सीखने में लागू करने की विधि है। यहाँ, दो अलग-अलग विषयों का एकीकरण होता है और इसे समृद्ध करने के लिए एक संकर सामग्री या विषय या विषय बनाता है छात्रों के अनुभवों को सीखना। दूसरी ओर, एक पार-अनुशासनात्मक पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों की सीमाओं को हटाने और नई सामाजिक घटना की आकांक्षा को पूरा करने के लिए ज्ञान के पूर्ण और नए सेट बनाने या निर्माण करने के लिए उन्हें एकीकृत करने की एक विधि है। जब हम शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र के बारे में बात करते हैं तो शिक्षक शिक्षा में बहु-विषयक दृष्टिकोण अपेक्षाकृत एक नई अवधारणा है। यहाँ शिक्षक या प्रशिक्षु शिक्षक शिक्षण और सीखने के इस नए तरीके की मदद से ज्ञान और कौशल प्रदान करने के लिए अच्छी तरह से परिपक्व हैं। प्रशिक्षु शिक्षकों के पास इस नए पाठ्यक्रम को विकसित करने का पर्याप्त अवसर है.

शिक्षण की विधि और वे आसानी से शिक्षार्थियों को प्रभावित कर सकते हैं और उनके बहुआयामी कौशल और अनुभवों को समृद्ध कर सकते हैं। शिक्षक या प्रशिक्षु शिक्षक विभिन्न विषयों से प्राप्त अनुभवों के साथ एक पाठ का चित्रण करेंगे। यह विधि विकास के वर्तमान युग के लिए बहुत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है और इसलिए एनईपी-2020 ने इसे हमारे राष्ट्रीय ढांचे के साथ पेश करने की

पुरजोर सिफारिश की है। शिक्षा का उद्देश्य न केवल संज्ञानात्मक विकास होगा, बल्कि चरित्र निर्माण और 21वीं सदी के प्रमुख कौशल वाले समग्र और अच्छी तरह से तैयार किए गए व्यक्तियों का निर्माण भी होगा। (4.4 of NEP 2020). अधिक समग्र शिक्षा की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए, एनईपी 2020 2030 तक बहु-विषयक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षक शिक्षा प्रदान करने का आग्रह करता है। सभी बहु-विषयक उच्च शिक्षण संस्थान गतिशील और अच्छी तरह से सुसज्जित शिक्षा विभागों की स्थापना करके B. Ed, M.Ed., और यहां तक कि Ph.D. डिग्री प्रदान करेंगे। एनईपी-2020 के अनुसार, शिक्षा में स्नातक की डिग्री में बुनियादी अंकगणित और गणित से संबंधित शिक्षाशास्त्र, बहु-स्तरीय शिक्षण के साथ-साथ मूल्यांकन तकनीक, विकलांग बच्चों को पढ़ाने और विशेष जरूरतों, शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उपयोग और शिक्षार्थी-केंद्रित या सहयोगी शिक्षा जैसी नवीनतम और प्रासंगिक शिक्षण तकनीकें शामिल होंगी।

प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली शिक्षा की इस पद्धति का एक उदाहरण है। यह प्राचीन प्रणाली बहु-विषयक पाठ्यक्रमों और विषयों से समृद्ध थी। विभिन्न स्तरों और श्रेणियों के छात्र इन संस्थानों में रहते थे और प्रयोगात्मक और समग्र सीखने के अनुभव एकत्र करते थे। उन्होंने खगोल विज्ञान, चिकित्सा, दर्शन, राजनीति, अर्थशास्त्र, योग, शारीरिक शिक्षा, रक्षा अध्ययन आदि जैसे अलग-अलग और प्रासंगिक विषयों को सीखा। परिचयात्मक भाग में, एनईपी-2020 ने इस मुद्दे पर भी जोर दिया और विभिन्न उच्च संस्थानों से शिक्षक शिक्षा संस्थानों सहित एक बहु-विषयक दृष्टिकोण शुरू करने का आग्रह किया। इसी तरह, विभिन्न आंकड़ों से पता चला कि नालंदा, तक्षशिला और अन्य प्रतिष्ठित उच्च शैक्षणिक संस्थानों जैसे प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों में बहु-विषयक शिक्षण-शिक्षण विधियों का विकास हुआ।

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में बहु-विषयक दृष्टिकोण के लाभः

- यह विधि छात्रों के अनुकूल है। यहां प्रत्येक छात्र को अलग-अलग क्षेत्रों से अपना विषय चुनने का पर्याप्त अवसर मिलेगा। यह पूरे पाठ्यक्रम अवधि के दौरान किसी भी विषय को चुनने या छोड़ने की गुंजाइश भी प्रदान करता है; यह विधि शिक्षक के अनुकूल है। यह व्यावहारिक और लचीले शिक्षण-अधिगम के लिए एक मंच प्रदान करता है
- अनुभवों से। यह छात्रों को नई अवधारणाओं और विचारों की शक्ति को समझने में मदद करता है। अपनी आवश्यकताओं में से चुनकर वे वास्तव में जीवन के एक व्यावहारिक तरीके को प्रेरित करते हैं। यह छात्रों के मन में व्यावहारिकता और यथार्थवादी विचारों और विचारों के द्वार खोलता है।
- यह दृष्टिकोण छात्रों को अपनी मानसिक शक्तियों का उपयोग करने और सही निर्णय लेने में मदद करता है। यह उनके बीच अलग-अलग विचारों के एकीकरण और अनुकूलन को बढ़ाने में मदद करता है और आलोचनात्मक सोच के माध्यम से उन्हें समृद्ध करता है।
- शिक्षा में बहु-विषयक दृष्टिकोण दुनिया की अधिक समग्र समझ प्रदान करता है और छात्र के व्यक्तित्व और चरित्र-निर्माण प्रक्रिया को बढ़ाता है। शिक्षण की इस पद्धति के माध्यम से छात्रों द्वारा दुर्लभ और आवश्यक सामाजिक मूल्यों और नैतिकता को अपनाया जाएगा।
- यह विधि ज्ञान और सूचना के सहयोग और एकीकरण के महत्व पर जोर देती है। यह नए विचारों और अवधारणाओं को शामिल और एकीकृत करके इक्कीसवीं सदी के व्यक्तियों को बनाने में मदद करता है।
- यह दृष्टिकोण वर्तमान वैश्विक प्रणाली में बहुत प्रासंगिक है और देश और विदेश में छात्रों के लिए रोजगार और नौकरियों के दायरे को बढ़ाता है।
- यह विधि छात्रों को प्रबंधकीय तरीके से काम करने में मदद करती है और प्रबंधकीय और निगमित कौशल और तकनीकों को बढ़ाती है।
- वे विभिन्न स्रोतों से एकत्र किए गए विभिन्न विचारों और विचारों को आसानी से संश्लेषित कर सकते हैं। छात्र इस दृष्टिकोण के माध्यम से मूल्यांकन और मूल्यांकन के विभिन्न कौशल सीखते हैं।
- विभिन्न तार्किक विधियों और दृष्टिकोण का अध्ययन करके, छात्र आसानी से अपने वांछित विषयों का चयन कर सकते हैं।
- यह उनमें तार्किक सोच और विश्लेषण शक्ति को बढ़ाता है। Â
- यह छात्रों को प्रेरित करता है क्योंकि यह सीखने के प्रामाणिक उद्देश्यों को देखते हुए व्यावहारिक ज्ञान से जुड़ा हुआ है। यह छात्रों को ज्ञान और विषयों के विभिन्न क्षेत्रों से निष्कर्ष निकालने में मदद करता है।

एक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में एक बहु-विषयक दृष्टिकोण के नुकसानः

- छात्र शिक्षा के बहु-विषयक मोड में अंतिम सीखने के लक्ष्य से विचलित हो जाते हैं क्योंकि विभिन्न विषयों और विषयों की उपस्थिति में आशा और इच्छा के नुकसान की संभावना होती है।
- शिक्षकों को छात्रों के सामने प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न कौशलों और निर्देशात्मक अनुभवों से समृद्ध होने की आवश्यकता होती है और इसलिए शिक्षण के इस दृष्टिकोण से परिचित होने के लिए विशेषज्ञता ज्ञान और अनुभव की बहुत आवश्यकता होती है।
- शिक्षा के सभी स्तरों पर विशेषज्ञ और कुशल शिक्षक प्राप्त करना बहुत मुश्किल है। Â इस दृष्टिकोण का पालन विदेशी विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों में किया जाता है जहां संकाय सुधार और अभिविन्यास के लिए प्रचुर गुंजाइश है। ये संस्थान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के अनुरूप ढांचागत सुविधाओं से सुसज्जित हैं। यही वातावरण भारत के अधिकांश क्षेत्रों में, विशेष रूप से त्रिपुरा राज्य में दिखाई नहीं दे रहा है; शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के हितधारकों के बीच इस दृष्टिकोण के बारे में जन जागरूकता और आम सहमति बढ़ाने की आवश्यकता है।

सुझाव:

- एनईपी-2020 की परिकल्पना के अनुसार पूरे देश में बहु-विषयक संस्थान और शैक्षणिक संस्थान शुरू करने का सुझाव दिया गया है। इस नीति ने बहु-विषयक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में चार चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने का भी सुझाव दिया। इस कार्यक्रम को शामिल करके, कला, मानविकी, वाणिज्य, विज्ञान आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों के छात्र। लाभ मिलता है। इससे उनका समय बचेगा और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के साथ अच्छी तरह से जुड़ने का अवसर बढ़ेगा।
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अनुसार प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता है। गुरुकुल वे शैक्षणिक स्थान थे जहाँ अधिकांश भारतीय लड़के और लड़कियां समृद्ध थे और सभी आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस थे। उस प्रणाली में, छात्र एक निश्चित समय में विभिन्न प्रकार के ज्ञान से परिचित थे। इसलिए इस प्राचीन शिक्षा प्रणाली को याद करने की आवश्यकता है।
- जैसा कि एनईपी-2020 द्वारा सुझाव दिया गया है, यह दृष्टिकोण अपेक्षाकृत आधुनिक है, नवीनतम कौशल और तकनीकों से सुसज्जित है और इसलिए इस पद्धति से जुड़े छात्र आसानी से शिक्षा की वैश्विक प्रणाली में नवीनतम प्रगति के साथ सहयोग करेंगे और एक वैश्विक नागरिक के रूप में एक प्रतिस्पर्धी दिमाग स्थापित करेंगे।
- एक ही मंच पर विभिन्न विषयों को पेश करना अनिवार्य है और इसलिए इस पद्धति की सफलता नवीनतम बुनियादी ढांचे और कुशल विकास और विभिन्न स्तरों से भारी धन पर निर्भर करती है। इस क्षेत्र से किसी एक घटक की अनुपस्थिति में पूरी शिक्षा प्रणाली की खामियों के लिए जिम्मेदार होगा।
- देश में शिक्षा के हर स्तर पर शिक्षण की एक बहु-विषयक पद्धति प्रदान करने के लिए देश भर में अधिक से अधिक एकीकृत शिक्षक शिक्षा केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता है। इसलिए इस संबंध में एनईपी-2020 के सुझावों का पालन करना बहुत जरूरी है।
- शिक्षण की इस नई और नवीन पद्धति के साथ समृद्ध और बढ़ाने के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में निवेश करने के लिए एक अच्छी तरह से वाकिफ और अच्छी तरह से बनाए रखा पाठ्यक्रम आवश्यक है। इस प्रकार, पूरे देश में शिक्षक शिक्षा संस्थानों के बाहर निकलने वाले संकायों को अधिक से अधिक अभिविन्यास और पुनश्चर्या पाठ्यक्रम शुरू करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष-

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मौजूदा शिक्षा प्रणाली में व्यक्ति का सर्वांगीण विकास असंभव है। शिक्षा की प्राचीन गुरुकुल प्रणाली के उदाहरणों का हवाला देते हुए हम कह सकते हैं कि विशेष रूप से बहु-विषयक शिक्षा और शिक्षक शिक्षा एक समय की आवश्यकता है। केंद्र या राज्य सरकारों के लिए इस पद्धति की बातचीत और सफलता के लिए सभी आवश्यक उपाय करना असंभव है, लेकिन सभी हितधारकों की सक्रिय भागीदारी की बहुत आवश्यकता है। एनईपी-2020 के सुझाव के अनुसार, पूरे देश में एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने और सभी शैक्षणिक संस्थानों और स्थानों को शिक्षा के लिए बहु-विषयक केंद्रों में बदलने की तत्काल आवश्यकता है।

संदर्भः

एलेक्सोपौलौ, ई., और ड्राइवर, आर. (1996). भौतिकी में लघु समूह चर्चाः जोड़े और चार में सहकर्मी अंतःक्रिया विधियाँ। जर्नल ऑफ रिसर्च इन साइंस टीचिंग, 33 (10) 1099-1114।
अटांडा, आर. (1999). क्या द्वारपाल पाठ्यक्रम शिक्षा विकल्पों का विस्तार करते हैं? वॉशिंगटन, डीसीः U.S. शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शिक्षा सांख्यिकी केंद्र।
बासम, पी. (2001). होमस्कूलिंगः चरम से मुख्यधारा तक। सार्वजनिक नीति स्रोत, द फ्रेजर इंस्टीट्यूट, (51).
बॉटम्स, जी. (1998). वे बातें जो छात्र के सीखने में सुधार के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। अटलांटा, जी. ए.: दक्षिणी क्षेत्रीय शिक्षा बोर्ड।
ब्राउन, A.L. (1994). सीखने की प्रगति। शैक्षिक शोधकर्ता, 23 (8) 4-12।
ब्लूम बी. एस., एंगेलहार्ट एम. डी., फर्स्ट ई. जे., हिल डब्ल्यू. एच., क्रैथवोल डी. आर. (1956). शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरणः शैक्षिक लक्ष्यों का वर्गीकरण। न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्कः डेविड मैके।
प्यारी।- हैमंड, एल. (1999a). अगली सदी के लिए शिक्षकों को शिक्षित करनाः अभ्यास और नीति पर पुनर्विचार करना। G.A. में। ग्रिफिन (एड। शिक्षकों की शिक्षाः शिक्षा के अध्ययन के लिए राष्ट्रीय सोसायटी की 98 वीं वार्षिक पुस्तक (पीपी। 221-256) शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।
मंडल, के. सी. (2021). नई शिक्षा नीति 2020: भारत में विकास की कुंजी भारतः नोशन प्रेस।
मेहरोत्रा, धीरज (2021). एनईपी 2020: शिक्षकों के लिए एक नज़र मेंः उत्कृष्टता की ओर भारतः नोशन प्रेस।